अनन्त श्रीसीतारामजू ।

चतुष्टगुटिका ।

अर्थात्

क्षमाषोडशी १, उपदेशपचीसी २, अनन्यप्रमोद ३, संक्षेप कवित्त ४,

श्रीमहाराज परमाचार्य्य अखिलजीवोद्धारक
श्री १००० स्वामीयुगलानन्यशरणजी रचित

जिसको

उक्त श्रीमत्स्वामीजी के लघुशिष्य श्रीसद्गुरुपाद
पृष्ठपूजक जनकनन्दनी शरण श्रीअयोध्याजी
श्रीलक्ष्मणकोटनिवासी की आज्ञानुसार

बाबू प्रभुदयालशरण के द्वारा

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव, बी. ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर (सी.आई.ई.,) के छापेखाने में छपा.

सन् १९१३ ई०

तृतीयबार १००० प्रति ।

चतुष्टगुटिका ।

छमाषोडशी ।

श्रीसीतारामाभ्यान्नमः ।

दोहा। हे सीताबर प्रणत दुख दरन हरन हियहाय।
मोहि अपनाइय शीघ्रतर प्रभो बिलंब बिहाय ॥ १ ॥
हे करुनेश उदारपन समन सकल संताप।
कृपाकोर करि हेरिये दीन जानि तपि ताप ॥ २ ॥
हौं अधमाधम मन्दमति अबिहित रति सबकाल।
हेसियबर निज नीच लषि अंगीकुरु ततकाल ॥ ३ ॥
जन्मजूह जगजाल मधि बँधिबुधिबिशद बिनाश।
कियो लियो दारुनदरद अब करुछमा प्रकाश ॥ ४ ॥
सुत नालायक अमित अघ पुंज रहित पितुप्रेम।
तऊ कृपाकरि जनकनित पालत सहितसुछेम ॥ ५ ॥
हे दयाल हौं दीनअति ग्रसित मोहमदब्याल।
रक्षक सुप्रभु सेवाय नहिं है दूसरोकृपाल ॥ ६ ॥
जितजोहों तितातिमिरमय आमय अमितकृपाल।
बंधबिमोचन जानकी बर निज नूर बिशाल ॥ ७ ॥
पापी प्रबल प्रपंचपथ प्रेमी प्रभुपद प्रीति।
रहितनिखिलअवगुनभवन कृपासिंधुसहभीति ॥ ८ ॥
पाखंडी कृतहत निठुर निंदक निरयनिकेत।
पाहिपाहिप्रभुपालिये गहिभुजनिरखिअचेत ॥ ९ ॥
हैं हर सायत रहम छम छमाकरन पन नाथ।

अपनाइयअपराधनिधि सबबिधिमुदप्रदगाथ ॥ १० ॥
दीनबंधु दीनार्त्तहर दीनानाथ दयाल ।
दुखियादीननेवाजिये सुकरधारि ममभाल ॥ ११ ॥
ऐसी कृपाकटाक्ष करु बातसल्यरस खानि ।
बिस्वबिलासबिहायपद भजौंजानकीजानि ॥ १२ ॥
छमाकियेबिनसुकृतचय साधत अघ न बिलात ।
तातें तुरत दयालदृग देखियेजन्मसिरात ॥ १३ ॥
यदपि बिस्वबिख्यात बहु अवतारी अवतार ।
तद्यपिमोहिनस्वपनेहू प्रभुबिनअपरअधार ॥ १४ ॥
भाव भजन वैराग्य बर बोध निरोधबिहीन ।
शरनशरन भवभयहरन सुरटलगीदिनदीन ॥ १५ ॥
छमा शमा बिन तम तमा जमा न होत हरास ।
करुनारमाप्रकासिये शमिसंसृति ततित्रास ॥ १६ ॥
षोडश दोहा प्रभुबिनय निज दीनता समेत ।
युगलानन्यशरण रच्यो पढ़तनसततमप्रेत ॥ १७ ॥
सावधान एकांत कहुँ बैठि सरुचि करु पाठ ।
मिटेमोहममतामलिन उदयहोत सुखठाठ ॥ १८ ॥
इति श्रीयुगलानन्यशरण बिरचिते छमाषोडशी समाप्तः ॥

उपदेश पचीसी लिख्यते।

श्रीसीतारामाभ्यान्नमः।

॥ दोहा ॥

शुद्ध अहार बिचारि के करै कुदानहि त्याग।
असतअसन भक्षनकिये रहे न रसअनुराग ॥ १ ॥
चलन फिरन इत उत बृथा लालच लोभ समेत।
करै कदाचित कैसेहूँ नहिं बुझाय मनप्रेत ॥ २ ॥
नीचबिमुख प्रभुपद कमल हिंसकादि नृप पास।
यांचे नहीं सुतोष गहि धरि अंतर बिस्वास ॥ ३ ॥
पाय विभवबहु त्रिबिधतउ करे न मन अभिमान।
युगलानन्य ममत्व ते रहित रहे प्रभुमान ॥ ४ ॥
शरनागत आवे कुजन द्रोही तऊ न त्याग।
परंपरा सतपुरुष की धारे रहै सुभाग ॥ ५ ॥
मद्य मांस निर्मूलकरि छोड़े तिमि तिनसंग।
अवस बढ़े अनुरागप्रभु चढ़ै अनूपम रंग ॥ ६ ॥
सीताराम परात्पर चरित हरित हिय हेतु।
पढ़े मढ़े मनि सम सुमन कढ़े कदूरत केतु ॥ ७ ॥
गौरश्याम अभिराम तन सत चिद मोदनिकेत।
नखसिख निरखे एकरस एकटकशौकसमेत ॥ ८ ॥

देह गेह सुख संपदा प्रियगन भये वियोग।
शोक स्वपनेहूं ना करै लखि मिथ्या संयोग॥ ६॥

भली भाँति तजवीज करि करे काज शुभसाज।
सहसा किये कलेस को भाजन अधिक अकाज॥ १०॥

काहू पर कबहूँ केहू करै न कोह कराल।
छमा रमा दृढ़ धीय धरि गावे रहस रसाल॥ ११॥

मन बच बपु दृग अंग मधि शांति कांति भरिदेय।
फुरे न दे उद्वेग तिल सो सियपिय रस लेय॥ १२॥

सुमिरन भजन जजन निषिल शुभ सुकाज के बीच।
आलस स्वपनेहु ना करै लहै सो पद अनमीच॥ १३॥

काम बास आधीन नहिं होय समुझि हितहानि।
है एकांत दृढ़ दान्त दिल पावै प्रभु मुदखानि॥ १४॥

जौन बचन अबिहित अरस अकह न कहिये ताहि।
सरस सुबैन बिचारि के बोलिय अनरित नाहि॥ १५॥

श्रुति सतमत दूषित करम किल्बिष रूप निहारि।
प्रान पयानहु भए पर नहिं कीजिये सम्हारि॥ १६॥

साँच आँच बिन स्वच्छ शुचि सुरुचि बढ़ावनहार।
बैन चैनप्रद बोलिये संतत तजि तम तार॥ १७॥

असतसंग बहु लाभप्रद प्रगट तऊ तेहि त्याग।
ठग मोदक मृदु मिष्ठतर तउ अंतर बिष आग॥ १८॥

करन कदंब समर सजग जी ते विषय बिसारि।
इनको कहा न कीजिये सतश्रुति सुमत बिचारि॥ १९॥
अहंकार भवभार को कारन सुमन बिलोकि।
त्यागे रागे प्रभु सुपद पागे प्रेम अलोकि॥ २०॥
बिना बिचारे स्वल्पहू कृत्य न करे सुज्ञान।
पावै पल प्रति प्रीतिधन विरहितधन ब्यवधान॥ २१॥
संत समागम निगम तरु साधन सुफल बिचारि।
सकल समय कीजे सरुचि सुमिरत नामखरारि॥ २२॥
बसे सोहावन स्वच्छ थल होय न जहाँ उपाधि।
अनुदिन बाढ़े विशदगुन प्रभुअनुकूल अबाधि॥ २३॥
राग द्वेष मत्सर मलिन दंभ दोष सुख सोष।
येन केन बिधि त्यागिये पाय बिमल तर तोष॥ २४॥
सकल शास्त्र सिद्धांत शुभ सब बिधि पर उपकार।
कीजे पीजे प्रेमरस सियस्वामी सरकार॥ २५॥
सबसे समुझे आपको लघुतर मान बिहाय।
सो सीताबर कृपा शुचि सर मधि नित्य नहाय॥ २६॥
उपदेशपचीसी सुखशशी सबविधि पोषनहारि।
संतशास्त्र सिद्धांतमत सबिधि देखावनवारि॥ २७॥
सावधान सहपाठ करि कीजे कलित बिचार।

युगलानन्य अयासबिन उतरिजाहु पर पार ॥ २८ ॥
सात्विक संग सुग्रंथ शुचि बास सुभोजन चारि।
सधेसतत अनमित नसत आमय कृपाखरारि ॥ २९ ॥
युगलानन्य शरन महा मंद मलीन गँवार।
पै श्रीनामप्रताप ते सुगम मोहि सुखसार ॥ ३० ॥
मम करनी सबभाँति ते निंदित नहिं संदेह।
पै श्रीसीताराम की कृपा पाय शुचि गेह ॥ ३१ ॥

इति श्रीयुगलानन्य शरण बिरचिते
उपदेशपचीसी समाप्तः ॥

अथ अनन्यप्रमोद

श्रीसीतारामाभ्यान्नमः ।

॥ दोहा ॥

श्रीसुखमानिधि जानकी जीवन नेहनिकेत ।
बंदौं मारुतसुत सुखद अति अनन्य व्रतकेत ॥ १ ॥
सर्बोपरि मुद मोदप्रद सुमत अनन्य अनूप ।
बडभागिनहित कछुकहौं शमन कलंक कुरूप ॥ २ ॥
यदपि जगत मधिअमितमत बरनहिंबिदुष बिचार ।
तदपि अनन्य अनूप मत नासन पथब्यभिचार ॥ ३ ॥
बिना अनन्य उपासना सकल बतकही छार ।
जैसे दूलह बिनुलगत सुभग बरात बिकार ॥ ४ ॥
इष्टमिलन कारन बिमल समुझ अनन्य सनेह ।
असतरीति पंचायती बरसतबिष दुखमेह ॥ ५ ॥
चातक सतत सराहिए गहे एक घन आस ।
अपर बिहंग कुरंग सब बिगत अनन्य बिलास ॥ ६ ॥
नौबत नेह निसंक नित बजै अनन्यन द्वार ।
प्रीतम प्रेम मधुरशबद जामधि छबिनिधि सार ॥ ७ ॥
जौलौं निजप्रिय इष्टमधि करत न मति परतत्व ।
तौलौं होति अनन्यता नहिं दृढ़ता शुचि सत्व ॥ ८ ॥
जैसे सतपति को प्रिया पतिव्रता करि बस्य ।
वैसेहीं बस इष्ट को करत अनन्य अवस्य ॥ ९ ॥

धिक मानुषतन पायकै कियो न भजन अनन्य ।
वृथावाद बहकत बकत बीत्यो बयस अधन्य ॥ १० ॥
एक सुमन बहु सदन मधि जौ न लगावत मूढ़ ।
तौन बिवेक बिहीन नित समुझत बस्तु न गूढ़ ॥ ११ ॥
अमित ईश यद्यपि बिदित बेद पुरानन बीच ।
तदपि न मेरो काजकछु सिय पिय बिन सममीच ॥ १२ ॥
श्रीसीताबल्लभ अखिल जीव ईश सिरताज ।
तिनपद पंकज प्रेम करु परिहरु सकल समाज ॥ १३ ॥
सब साधन संपन्न फल मोक्ष बदहि बुध बेद ।
तेहिदिस दृगभरि नहिंलखै निजअनन्य गतखेद ॥ १४ ॥
सुरनर ईश अनीश दिस नहिं चितवत चखचाहि ।
निजप्रीतम रसमगनरहि गहि अनन्य अवगाहि ॥ १५ ॥
बिभिचारी डोलैं बिपुल पढ़ि बहु बेद पुरान ।
भजन अनन्य सवादबिन सबमत धूरि समान ॥ १६ ॥
श्रीसीताबर नाम गुन धाम रूप बिनु आन ।
कहैकहावै अपरकछु सो व्यभिचार प्रमान ॥ १७ ॥
बक्तापन सब ब्यर्थलखु रहित अनन्य सुरीति ।
ज्ञान ध्यान रसरंग बिन बरनहिं बिमल बिनीति ॥ १८ ॥
सर्बस्वाद सुखसदन श्री स्वच्छ अनन्य ब्रतेश ।
युगलानन्य शरन हृदय धारत बस बर देश ॥ १९ ॥
जाकीरति न अनन्यमत असत बितायो जन्म ।
ताकी गति करि भीमसम तमगम सहित सभर्म ॥ २० ॥

निराबरन झांकी झलक इष्ट स्वरूप अनूप।
बिना अनन्य उपासना दुर्लभ प्रिय रसरूप ॥२१॥
भजन करत सबहीसुजन निजनिज रुचि अनुसार।
पै पावहि नहिं देस वह परानंद रससार॥२२॥
कोटिन कलप प्रजंतऊ करै जोग जप ज्ञान।
तऊ न पहुँचै परमपद रहित अनन्य विधान॥२३॥
सतग्रंथन मधि अमित विधि आदि मध्य अवसान।
शुचिसिद्धांत अनन्यमत नाशन मोहमलान॥२४॥
श्रीसीताबल्लभ बिमल बिधुमुख बचन बिशेष।
हौं अनन्य आधीन नित असंदेह प्रियपेष॥२५॥
लोक बेद अंतर परम प्रभा प्रभाव अनन्य।
निर्बिबाद सिद्धांतसत समुझहिं रहस सुधन्य॥२६॥
होइ एक को एक रस अति आश्रित बसु जाम।
सो सबबिधि पालन करै दै तन मन धन धाम॥२७॥
सुधासरोवर सम सुखद भजन अनन्य विचारु।
अपर सकल साधन यथा गोमयरस अतिछार॥२८॥
चंचलता तजि इष्ट पर कीजे सरस सनेह।
कहा बिराने भवन से काज महा दुखगेह॥२९॥
भजन अनन्य प्रताप की महिमा अधिक अपार।
जानहिंरसिक अनन्यधी तजि बिकारव्यभिचार॥३०॥
श्रीमुख सियनागर कह्यो मोहि अनन्य प्रियप्रान।
तासुतंत्र नितहीं रहौं बिरहित ईश बिधान॥३१॥

परपति पेखति रेनुका हनी गई ततकाल।
विदित अहिल्याकी कथा बिन अनन्य यह हाल॥ ३२॥
और अनेकन की कुगति भई अनन्य बिहीन।
होति हेरिए नैन निजु सजु अनन्य मत पीन॥ ३३॥
द्वैताद्वैत बिसिष्ट मत तिमि अद्वैत सद्वैत।
सबसतमत स्वामी सुपद समुझ अनन्य बनैत॥ ३४॥
खटका सब मत माँझ लखु बूझु बिवेक बिचार।
बेखटके सबभाँति से मत अनन्य अबिकार॥ ३५॥
इष्ट सुजीवनमूल सत सुधा लहे जन सोय।
जिनके मनमधि एकरस मत अनन्य दृढ़ होय॥ ३६॥
निंदा अधिक अजोगसम रोग सोग जियजानु।
सो न अनन्यन को उचित साँचसखुन पहिचानु॥ ३७॥
अमल अनन्यन की रहनि शांति सहित संतोष।
कामादिक प्रतिबिंबहूँ नहिं परसत गुनि दोष॥ ३८॥
बात बनाए से नहीं मिलत अनन्य रहस्य।
ताते करतबसार शुचि अरुचिशमन बरबस्य॥ ३९॥
षट प्रकार सुखसार श्री सुमत अनन्य सुगन्य।
सुजन सनेही समुझिहैं जिनके नेह सुधन्य॥ ४०॥
युगलानन्य शरन सदा निजअनन्य मत मोद।
माँझनिरत मनमतिकिए पावत बिशद बिनोद॥ ४१॥
स्वच्छ उपासक सुनिश्रवन सुख पैहैं सबभाँति।
व्यभिचारिन मनखटकिहै रहितनेह निधिकांति॥ ४२॥

इति श्री रहसि अनन्यमत मंडन दोहा चारु।
पढ़त सुनत इत उत विषय नसिहैं सुरति निहारु ॥ ४२ ॥

इति श्री श्री श्रीश्रीश्रीस्वामी महाराजाधिराज सिरताज
श्रीमहन्त जीवाराममोदधाम लघु किंकरानुकिंकर
युगलानन्यशरन बिरचित अनन्यप्रमोद
समाप्तः श्रीसीतारामजी की जय ॥

संक्षेप कबित्त श्रीनामपरत्व।

श्रीसीतारामाभ्यान्नमः।

॥ कबित्त ॥

मेरो मन कहूं श्यामसुंदर सों लागि है।

प्रेम मकरंद पूरिसुपद बिलोकि जानु जंघ कमनीय कटि आभरन रागिहै। नेहानिधि नाभि नैन निरखि अनूप उर त्रिबली तरंग बीचि जानि अनुरागि है॥ कंठ कमनीय कल चिबुक कपोल द्विज बदन बिचित्र बिधु हेरि ताप त्यागि है। श्रीयुगल अनन्य बाम दाम सुसनेह सम मेरो मन कहूं श्यामसुंदर सों लागि है॥ १॥

सोई सीताराम सों सनेह सांचो किए हैं।

जिन्हें जग जाहिर जहर ज्वालमाल लगे पगे प्रिय पावन परत्व प्रेम पिये हैं। सीय स्याम सेवा सानुकूल शूल भूल बिना बिबिधि बिकार ब्यवहार पीठि दिये हैं॥ जानकी जीवन जू को कलित गुनानुबाद गावत उमंग सजवाय लाह लिये हैं। श्री युगलअनन्य स्वच्छ सार संहितादि मत सोई सीताराम सों सनेह सांचो किये हैं॥ २॥

सहस पचीस लों जपत जौन जीह नाम राम अभिराम ताहि मंगल अवेशे हैं। जाके नेम अचल पचास सहसाधिक है सो तो देव देबिन ते पूजित बिशेशे हैं॥ जौन अनुरागी बड़भागी के सुनेम लक्ष सो तो परत्यक्ष स्वच्छ रहित अंदेशे

हैं। श्रीयुगलअनन्य ताकी महिमा बखाने कौन जाके सुखसागर की रटन हमेशे हैं॥ ३॥

नाम तो अनंत तामें रामनाम भूप है।

नारायण आदि नाम कहे कोटि बार तऊ तुल्यता न होत नाम बारक अनूप है। और नाम देत भुक्ति मुक्ति विष्णु लोक लगि रटे राम नाम देश पावै रस रूप है॥ कीजिये न हठ सठपन छोड़िदीजे नाम परमपियूष और मत अन्धकूपहै। श्रीयुगलअनन्य साँच बदत बजाय बात नाम तो अनंत तामें राम नाम भूप है॥ ४॥

और नामदीपक मशाल तारा शशि सम रामनाम सूर शत सहस समान रे। और नाम सिता कंद मधु मीठ मिश्री सों रामनाम स्वच्छ सुधासार रसखान रे॥ और नाम तन धन सदृश सोभायमान रामनाम प्रबल प्रधान पंच प्रान रे। श्रीयुगलअनन्य और नाम हैं बराती सम रामनाम दंपति बिचारु त्यागु मान रे॥ ५॥

और नाम अपर मनीन के समान स्वच्छ रामनाम चित चिंतामनी चाहि चाह रे। और नाम रैयत दिवान औ वज़ीर सम रामनाम अचल अखंड बादशाह रे॥ और नाम शिष्य सद समता सजाये सदा रामनाम गुरु गुन अगम अथाह रे। श्रीयुगलअनन्य और नाम दिनचारि प्यार रामनाम एकरस नित्य निर्वाह रे॥ ६॥

ताहि पर बार बार कोटिन तलाक है ।

चारो युग बीच मीचमद को मलनहार नाम सुखसार तरवार धार धाक है । यामे जो मरमधुर धरमधुरीन जन जानत सुजान जौन दिव्य दिलपाक है ॥ माया मलमद मांझ मोह्यो जाको चित्त तौन लखि ना सकत नाम महिमा अचाक है । श्रीयुगलअनन्य जाहि रुचत न रामनाम ताहि पर बार बार कोटिन तलाक है ॥ ७ ॥

नाम के रटन बिन छूटत न दाग है ।

चाहै चारों ओर दौर देखो गौर ज्ञानहीन दीनता न छीन होय भीन अघ आग है । जहां तक साधन सुराधन बिलोकिये जू बाधन उपाधन सहित नट बाग है ॥ तीरथ की आस सो तो नाहक उपास्य हेतु एक बार राम कहे कोटिन प्रयाग है । श्रीयुगलअनन्य इत उत भ्रम श्रम दाम नाम के रटन बिन छूटत न दाग है ॥ ८ ॥

रटे नहीं नाम ताके मुख माँझ थूकिए ।

कीजिये न शंक रंक राव को समान मानि तानि बैन बान लच्छ चालत न चूकिए । मान अपमान दिसि देखियें न भूलि कहूँ प्रबल प्रताप उपदेशहीन मूकिए ॥ नाम महाराज सामराज सुखदैन गुन देव नर नाग कान चित्त बीच फूकिए । श्रीयुगलअनन्य जौन संत सतगुरु कहैं रटे नहीं नाम ताके मुख माँझ थूकिए ॥ ६ ॥

रटे नहीं नाम सो बिशेष बीटकीट है।

जीवत मृतक तातें जानि न परत पीर अंतक सदन जाय अंत सिर पीटिहैं। कहे हम पण्डित प्रवीन सभा जीते बहु रटे बिना नाम पढ़े पाथर औ ईट है॥ दान अभिमान सों तौ अतिही नदानपन नृग के समान नृप दानी गिरगीट है। श्रीयुगलअनन्य सब फोकट धरमु लखु रटे नहीं नाम सो विशेष बीट कीट है॥ १०॥

रटे नहीं नाम ताके मुखही में नर्क है।

सुनिये न बात घात कठिन विचारि चित्त महाम्लेच्छ मूढ़ निसिचर से न फर्क है। नाना मत बाद व्योम सुमन सुगंध माँझ मोहिरहे मूढ़ कैसे जाने नाम अर्क है॥ सीता राम लोकअभिराम भक्त पास सठ जात सकुचात रैन ऐन गेह गर्क है। श्रीयुगलअनन्य बात बिदित पुरान बीच रटे नहीं नाम ताके मुखही में नर्क है॥ ११॥

रटे नहीं नाम सो उपासक न राम को।

होत कहा बिबिधि बनाये बात व्याध वत आध ना मिटत विना ध्याए सुखधाम को। प्रबलउपासक सिरोमनी रहस्य निधि निरखिये नैन निज बीर अभिराम को॥ ऐसो जप्यो नाम एक रस बसु जाम रोम रोम अंक दाम बात बिदित सुदाम को। श्रीयुगलअनन्य शक सकल बिहाय कहैं रटे नहीं नाम सो उपासक न राम को॥ १२॥

रटे जौन नाम तामें आवैं गुन शम के।

करुना कलित कृपा सरस सुशील सम दाथा दीनहित चित्त दायक अराम के। अधिक अमान मानप्रद सदसार गुनग्राही दुखदाही मृदुताई खास आम के॥ कोमल बचन मन तन में कठोरता को लेसहूँ न मिलै साँचे राचे सुखधाम के। श्रीयुगलअनन्य उर खटका न जानो नेक रटे जौन नाम तामें आवैं गुन शम के॥ १३॥

नामिन के पास सुखरास रहैं छाय के।

जैसे धनवान देनवारे के समीप जन रहे सदा घेरि सुधि आपनी भुलाय के। जैसे सत सिसुहीन छोड़े पाव पल मातु जैसे सदशिष्य गुरु सेवे सरसाय के॥ जैसे दिब्य थलन के बीच बसे पुन्य पूत ऊत भूत नासन निमित्त भाव भाय के। श्रीयुगलअनन्य नेहनिधि निज नामरत नामिन के पास सुखरास रहैं छाय के॥ १४॥

और धन धूम कैसो धौरहर हेरिये।

भूप तसकर आग आदिक अनेक भीति रहे तन मन स्याह आह यों निबेरिए। महाराज नामधन अद्वितीय जोहो जन जामें काहू भाँति से न कहूं शंक घेरिए॥ बाढ़े दिन दिन दिये दुगुन असंख गुन तातें सब त्याग करु नाम बित्त ढेरिए। श्रीयुगलअनन्य समझावैं सब संत श्रुति और धन धूम कैसो धौरहर हेरिए॥ १५॥

सीताराम नाम धन जाके सोई साहूकार राजन को राज सुरनायक निशंक है। चौदहूं भुवन बीच ऊच नीच हीय माँझ फैलि रह्यो सुजस अनूपम मयंक है॥ ताके बर बदन बिलोके व्यवधान बिना दिव्य गुन ज्ञान कुल कटत कलंक है। श्रीयुगलअनन्य श्रुति संमत सदैव स्वच्छ संत समुदाय बदैं बैन दिए डंक है॥ १६॥

जौन थल सम्यक कलेश को निवास नित्त तौन थल नामही की कृपा पाय बाचिहो। तहां न सहाय कोऊ मातु पिता बंधु भ्रात दारा सुत झूठे याते इनमें न राचि हो॥ आपनेई स्वारथ समेत सजे नेह सब तेरो हितकारी नाम वाही मध्य माचिहो। श्रीयुगलअनन्य सांच कहैं सब संत गुरु राम नाम जपे फेर जग में न नाचि हो॥ १७॥

हाय बपु मानुषहुं पाय न उधास्यो आप ताते बार बार सहे ताप दाप दाम है। प्राप्त परतच्छ प्रेमसिंधु श्रीभरतखंड ताहू में सरंग सतसंग अभिराम है॥ सुलभ उपाय नाम रटन बतावें संत बड़े दयावंत तऊ मानत न बाम है। श्रीयुगल अनन्य अन्त होयगी खराबी खल रहेगी न आबी दुख घोर परिनाम है॥ १८॥

नाम मनोहर चूंदरी चारु सुचाह से हे रसने नित धारो। कैसेहूं काय कलेश पड़े पर पाव घड़ी सपने न उतारो॥ दिव्य दशा द्युति दूनी दशो दिशि दाम सुधाम नवीन नि-

हारो। श्रीयुग्मअनन्य करोरन भूषण चूंदरी रंग के ऊपर वारो॥ १६॥

नाम अनुरागिन की रीति मन पार है।

रहैं संक तंक बिन अचल अडोल नित्त चित्त में प्रताप नाम छायो अबिकार है। बहे बर बात उनचास हू समुंदसात होय जाय एक तऊ खेद न बिकार है॥ सूर सत उदित के भये में न लेश डर सावधान वृत्ति नाम लीन एक तार है। श्रीयुगलअनन्य मेरी मति ना पहुँचिसके नाम अनुरागिन की रीति मन पार है॥ २०॥

संतन सुरीति चली आई है हमेस ते।

आवे जौन पास राव रंक छोटो बड़ो कोई ताही उपदेसें नाम विमल विशेश तें। छावैं छबि छावनी बहावैं हाय जाय ज्वर जीवन बतावैं रूप रमन रसेश तें॥ लावैं निज ठौर भौंर विषम ते काढ़ि ताहि देवैं दिव्य ज्ञान दुति अधिक दि-नेश तें। श्रीयुगलअनन्य सांच सीष सिखलावैं स्वच्छ संतन सुरीति चली आई है हमेश तें॥ २१॥

सोई सत संग जामे लगे राम रंग जू।

कथन बकन बैन चैन बिन गान तान बिबिध बिधान उपखान हू कुसंग जू। मेरे मत मांझ दिव्य संग अबिकार उह जाके किए होय अनायास भवभंग जू॥ रहे नहीं रेख राग द्वेष को कदापि कहूं बाढ़े अनुदिन उर रहस उमंग जू।

श्रीयुगलअनन्य और संग बदरंग अंग सोई सतसंग जामें लगे राम रंग जू ॥ २२ ॥

छोड़िए बड़ाई लघुताई उर लाइए।

बड़े बड़े भूपन को कठिन कलंक जंग जगत जवाल चाह दाह दुखदाइए। छोटे छोटे जीव थोरी चीज में प्रमोद मन पावैं सुख छावैं सोवैं मौज उमगाइए ॥ बड़ोई मतंग बांधो सीकरन खेद अति छोटी छोटी चींटी चरैं मुदित लखाइए। श्रीयुगलअनन्य सूर ससि उडगन देखि छोड़िए बड़ाई लघुताई उर लाइये ॥ २३ ॥

जौलौं अभिमान तौलौं मोद को न घर है।

चाहै कोटि भांति जप तप योग ज्ञान गढ़े चढ़े न उमंग रंग अंग बर तर है। भावै नहीं रंचहू परेश अवधेश उर फुर बात मानो अभिमान महा गर है ॥ सोई संत धन्य जिन जीत्यो अभिमान नीच उनको न मीच कीच सदा वे अडर है। श्रीयुगलअनन्य लघुताई धार मेरे मन जौलौं अभिमान तौलौं मोद को न घर है ॥ २४ ॥

काहू की संगति स्वप्नहुं मांहि न कीजिए है कुसमो दुखदायक। होय एकांत भजो सियकांत समर्पि के सीस सुस्वामि सहायक ॥ कामना कोश कढ़ाय सदा बसिए पद पंकज बीच सुभायक। श्रीयुग्मअनन्य सुनाम बिना सब साधन बाधन जानिए मायक ॥ २५ ॥

नाम बिना बकवाद समान सुज्ञान औ योग बिवेक की गाथा। होत नहीं भ्रमहानि कदाचितरीझतहैं न कभू रघुनाथा॥ होयसचेत निकेत निरंतर बासकरो अपने सुखसाथा। श्रीयुग्म अनन्य सियाबर की करुना ते पिवो सरजू प्रिय पाथा ॥ २६ ॥

बामा से सनेह साजि सामा दुख धामा भजि तजि राम नामा अभिरामा ऐसो मंद है। निमक हरामा चाम जामा को पहिरि तम तामस तमामा मांझ मगन सुछंद है ॥ अगुन अकामा खर खामा जामे तामे बिसरामा मानि मोह्यो बसु जामा फसि फंद है। श्रीयुगलअनन्य गुनग्रामा श्याम श्यामा मांह कियो न सुरति पति सह्यो दुख द्वंद है ॥ २७ ॥

॥ इति ॥